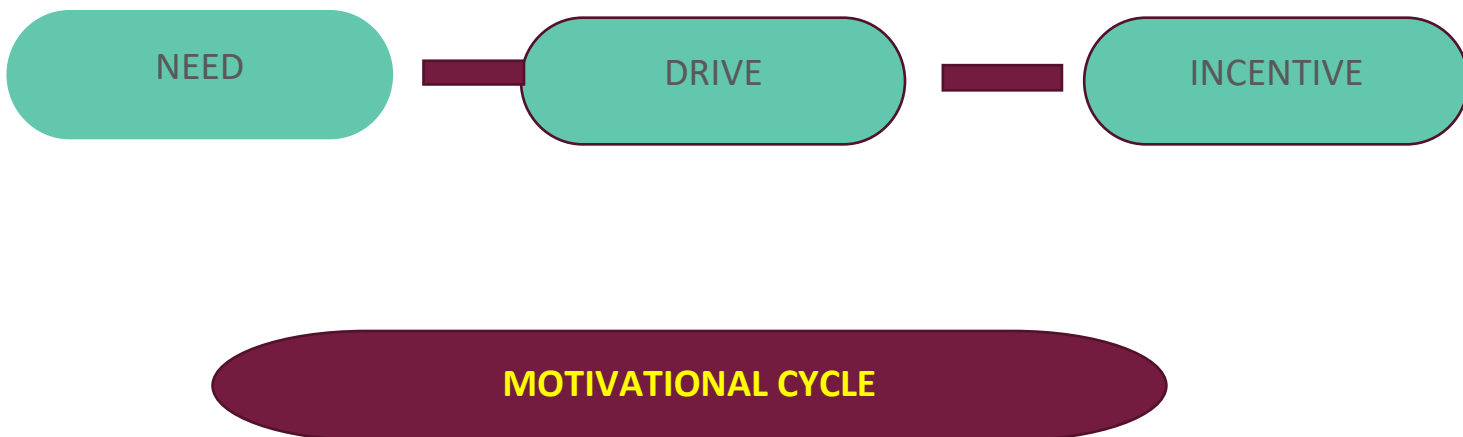


**B.A Part-1 Psy. Paper-1 Study material during lockdown
by Dr. Prabha Shree (Guest Faculty Psychology deptt.
Vaishali Mahila College, Hajipur). Class Date- 23.05.2020**

अभिप्रेरणात्मक चक्र

(Motivational Cycle)

अभिप्रेरणा को और अधिक स्पष्ट करने के लिए मनोवैज्ञानिकों ने अभिप्रेरणात्मक चक्र के संप्रत्यय का प्रतिपादन किया। इस चक्र के मुख्य तीन तत्व हैं- आवश्यकता (Need), प्रणोद (Drive) तथा प्रोत्साहन (Incentive)।



1. आवश्यकता (Need)- मनोवैज्ञानिकों ने आवश्यकता (need) को अभिप्रेरणात्मक चक्र का पहला कदम माना है, क्योंकि किसी भी अभिप्रेरणा की उत्पत्ति में सबसे पहले आवश्यकता उत्पन्न होती है। जब प्राणी के शरीर में किसी चीज की कमी या अति की अवस्था किसी कारण से उत्पन्न होती है, तो इसे आवश्यकता कहते हैं। जैसे प्यास की अवस्था में व्यक्ति की कोशिकाओं में पानी की कमी हो जाती है, जबकि पेशाब जाने की आवश्यकता जब उत्पन्न होती है, तो ऐसी अवस्था में शरीर में कुछ पदार्थों की अधिकता होती है। इस अवस्था को निष्कासन आवश्यकता कहते हैं। हमारे शरीर में कुछ ऐसे पदार्थ अधिक मात्रा में जमा हो जाते हैं कि यदि उन्हें बाहर नहीं निकाला जाए तो इससे प्राणी का जीवन संकट में पड़ सकता है। अतः

आवश्यकता से तात्पर्य प्राणी के इन दोनों तरह की अवस्थाओं अर्थात् कमी तथा अति से होता है।

2. प्रणोद (Drive)- जब व्यक्ति को किसी चीज की आवश्यकता महसूस होती है, तो ऐसी अवस्था में उसमें क्रियाशीलता बढ़ जाती है। वह पहले से तनावपूर्ण दिखाई देता है जैसे भूख की आवश्यकता से भूख प्रणोद उत्पन्न होता है, प्यास की आवश्यकता से प्यास प्रणोद उत्पन्न होता है इत्यादि।

कभी-कभी व्यक्ति आवश्यकता एवं प्रणोद को समान समझते हैं, परंतु वास्तव में यह दोनों पद समानांतर अवश्य हैं, लेकिन एक नहीं है। समानांतर का अर्थ यहां दोनों में वृद्धि या कमी साथ-साथ होने से है जैसे अगर भूख की आवश्यकता में कमी होती है तो प्रणोद के स्तर में भी कमी होती है। यदि भूख या प्यास की

आवश्यकता बढ़ती है तो तनाव या क्रियाशीलता भी अर्थात प्रणोद भी बढ़ती है

3. प्रोत्साहन या लक्ष्य (Incentive or Goal)- प्रोत्साहन या लक्ष्य एक ऐसी वस्तु है, जो व्यक्ति या पशु को अपनी ओर आकर्षित करता है तथा जिसकी प्राप्ति से व्यक्ति की आवश्यकता की पूर्ति तथा प्रणोद में कमी आती है। जैसे भूखे व्यक्ति के लिए भोजन प्रोत्साहन है जिसकी प्राप्ति से आवश्यकता में कमी आती है या वह समाप्त हो जाती है। लक्ष्य दो प्रकार के होते हैं- धनात्मक तथा ऋणात्मक लक्ष्य। धनात्मक लक्ष्य जैसे- भोजन, पानी इत्यादि को व्यक्ति प्राप्त करना चाहता है, जबकि नकारात्मक लक्ष्य जैसे- दंड, अत्यधिक गर्मी या ठंड से बचना चाहता है।

ऊपर के वर्णन से स्पष्ट है कि आवश्यकता (need), प्रणोद (drive) तथा प्रोत्साहन (incentive)

अभिप्रेरणात्मक चक्र के प्रमुख तीन क्रमिक कदम हैं। पशु हो या मानव, अभिप्रेरण (motivation) की स्थिति में सबसे पहले उसमें किसी न किसी आवश्यकता की उत्पत्ति होती है। आवश्यकता की उत्पत्ति से व्यक्ति में क्रियाशीलता तथा तनाव काफी बढ़ जाता है जिसे हम प्रणोद की संज्ञा देते हैं। प्रणोद की उत्पत्ति से व्यक्ति का व्यवहार उद्देश्यपूर्ण हो जाता है तथा किसी लक्ष्य की ओर अग्रसारित होता है। मान लिया कि कोई व्यक्ति काफी भूखा है। फलस्वरूप वह किसी होटल में जाता है और मनपसंद भोजन करके अपनी भूख मिटा लेता है। इस उदाहरण में, व्यक्ति में भूख की आवश्यकता है जो इसलिए उत्पन्न हुई है कि उसने कुछ घंटों से भोजन नहीं किया है। मनोवैज्ञानिकों ने यह भी बताया है कि इस तरह की अवस्था में व्यक्ति के खून में चीनी की मात्रा

का स्तर घट जाता है। इस तरह की आवश्यकता उत्पन्न होने पर व्यक्ति में प्रणोद उत्पन्न होता है अर्थात् व्यक्ति अधिक क्रियाशील हो जाता है तथा तनाव की स्थिति से गुजरने लगता है। भूख प्रणोद (hunger drive) के उत्पन्न होने पर व्यक्ति उद्देश्य पूर्ण व्यवहार करने लगता है अर्थात् वह किसी होटल या किसी ऐसे स्थान की खोज करने लगता है जहां जाने से उसकी भूख मिट सके। होटल में जाना ऐसा ही एक उद्देश्यपूर्ण व्यवहार है। होटल में जाने से उसे लक्ष्य यानी भोजन की प्राप्ति होती है। अतः भोजन एक प्रोत्साहन है जिसकी प्राप्ति से भूख की आवश्यकता समाप्त हो जाती है तथा क्रियाशीलता तथा तनाव भी घट जाता है। हालांकि कुछ समय के बाद फिर भूख की आवश्यकता उत्पन्न हो जाती है और वही प्रक्रियाएं दोहराई जाती हैं। यही बात प्यास की

आवश्यकता तथा काम की आवश्यकता के साथ भी है। यही कारण है कि मनोवैज्ञानिकों ने भूख, प्यास तथा काम को चक्रीय आवश्यकता (cycle need) कहा है। यह सभी आवश्यकताएं किसी एक समय में समाप्त होकर कुछ समय के बाद अपने आप एक चक्र (cycle) के रूप में उत्पन्न होती रहती हैं।

कुछ समय पहले Deci (1975) ने मानव अभिप्रेरणा को अभिप्रेरणात्मक चक्र द्वारा और अधिक स्पष्ट व्याख्या करने के लिए एक चौथा तत्व (element) भी जोड़ा है- संज्ञान (Cognition)। संज्ञान एक ऐसी मानसिक प्रक्रिया है जिसमें चिंतन, प्रत्यक्षण, स्मरण, भाव आदि प्रक्रियाएं सम्मिलित रहती हैं। मनोवैज्ञानिकों ने इसे संज्ञानात्मक अभिप्रेरणात्मक चक्र (Cognitive motivational Cycle) कहा है।